# हिमाचल प्रदेश विधान सभा

विधान सभा की विशेष बैठक शुक्रवार, दिनांक 26 मई, 2017 को माननीय अध्यक्ष, श्री बृज बिहारी लाल बुटेल की अध्यक्षता में कौंसिल चैम्बर, शिमला-171004 में 11.00 बजे पूर्वाह्न आरम्भ हुई।

## शोकोद्गार

**26.05.2017/1100/जेके/एजी/1**

**अध्यक्षः** आज बारहवीं विधान सभा का विशेष सत्र आरम्भ होने जा रहा है। इस विशेष सत्र में भाग लेने के लिए मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूं। इससे पूर्व की आज की कार्यवाही आरम्भ करें, मेरा सभा-मण्डप में उपस्थित सभी से निवेदन है कि वे राष्ट्रगान के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

**( सदन के सभी माननीय सदस्य राष्ट्रगान के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए )**

अब शोकोद्‌गार होंगे। अब माननीय मुख्य मंत्री जी, स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह, आयुर्वेद एवं सहकारिता मंत्री और श्री मूलराज पाधा, पूर्व विधायक, हिमाचल प्रदेश विधान सभा के निधन पर शोकोद्‌गार प्रस्तुत करेंगे।

**मुख्य मंत्रीः** अध्यक्ष महोदय, मुझे इस माननीय सदन को यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुख हो रहा है कि बंजार के विधायक एवं आयुर्वेद व सहकारिता मंत्री, श्री कर्ण सिंह का 12 मई, 2017 को 59 वर्ष की आयु में निधन हो गया। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। श्री कर्ण सिंह का जन्म 14 अक्तूबर, 1957 को कुल्लू में हुआ था।

श्री एस0एस0 द्वारा जारी-----

**26.05.2017/1105/SS-AG/1**

**मुख्य मंत्री क्रमागतः**

उन्होंने Ferguson महाविद्यालय, पूना से बी0ए0 ऑनर्ज़ की उपाधि प्राप्त की थी। स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह ने वर्ष 1990, 1998 और 2012 में तीन बार बंजार विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। श्री कर्ण सिंह वर्ष 1998 में राज्य मंत्री, प्राथमिक शिक्षा एवं विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी स्वतन्त्र प्रभार रहे। वर्ष 2015 में उन्हें आयुर्वेद एवं सहकारिता मंत्री के पद पर मंत्रिमण्डल में शामिल किया गया। उनकी सामाजिक कार्यों तथा गरीब लोगों की सेवा में विशेष रुचि थी। उन्होंने हमेशा ही पिछड़े एवं कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य किया। यह माननीय सदन श्री कर्ण सिंह जी द्वारा प्रदेश तथा समाज के लिए की गई सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है और उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करता है। यह माननीय सदन ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा उनके परिजनों को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

अध्यक्ष महोदय, मुझे इस माननीय सदन को यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुख हो रहा है कि श्री मूलराज पाधा का 8 अप्रैल, 2017 को 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। श्री मूलराज पाधा का जन्म 5 मई, 1937 को घन्यारा में हुआ था। स्वर्गीय श्री मूलराज पाधा वर्ष 1985 में पहली बार धर्मशाला विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए निर्वाचित हुए। उनकी सामाजिक कार्यों तथा गरीब लोगों की सेवा में विशेष रुचि थी। उन्होंने हमेशा ही पिछड़े व कमजोर लोगों के उत्थान के लिए कार्य किया। यह माननीय सदन श्री मूलराज पाधा जी द्वारा प्रदेश तथा समाज के लिए की गई सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए यह माननीय सदन ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा उनके परिवारजनों को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

**26.05.2017/1105/SS-AG/2**

**अध्यक्षः** अब श्री प्रेम कुमार धूमल, नेता प्रतिपक्ष अपने उद्‌गार प्रस्तुत करेंगे।

**प्रो0 प्रेम कुमार धूमलः** आदरणीय अध्यक्ष जी, अभी पिछले सत्र में ही मार्च महीने में श्री कर्ण सिंह का हंसमुख चेहरा, मृदुभाषा हम इस सदन में देखते व सुनते थे। किसी को ऐसा संदेह नहीं था कि वे इतनी जल्दी हम सबको छोड़ कर चले जायेंगे। श्री कर्ण सिंह एक बहुत ही मृदुस्वभावी और मिलनसार व्यक्तित्व रखते थे। 59 वर्ष की उम्र में उनका दिल्ली के AIIMS में देहांत हुआ है। पहली बार वे 1990 में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर विधायक चुने गए। 1998 में दूसरी बार विधायक चुने गए और

जारी श्रीमती के0एस0

**26-05-2017/1110/केएस/एएस/1**

**श्री प्रेम कुमार धूमल जारी**----

एलीमेंटरी एजुकेशन तथा साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी के स्वतंत्र प्रभार के मंत्री रहे। वे किसी भी दल में रहे हो उनकी मित्रता across the party line होती थी। वे सभी का सम्मान करते थे । परिवार उन्हें प्यार से मुन्नू कह कर पुकारता था। उनका इतनी जल्दी संसार से चला जाना हम सभी के लिए दुख की बात है। मैं अपनी तथा अपनी पार्टी की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को इस सदमें को सहने की शक्ति दें।

अध्यक्ष महोदय, श्री मूलराज पाधा 80 वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधार गए। 1985 से 1990 तक वे इस सदन के माननीय सदस्य रहे। मेरा उनके साथ ज्यादा वास्ता नहीं रहा। वे मुझे दो-तीन बार मिले लेकिन पंचायत प्रधान से काम शुरू करके उन्होंने विधायक पद तक प्राप्त किया। उनकी आत्मा को परमात्मा शांति दें और उनके परिवार को इस सदमें को सहने की शक्ति प्रदान करें। धन्यवाद।

**26-05-2017/1110/केएस/एएस/2**

**स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रीः** अध्यक्ष महोदय, बड़े दुख की बात है कि हमारे एक सहयोगी श्री कर्ण सिंह जी जो आयुर्वेद एवं सहकारिता मंत्री थे, आज इस सदन में मौजूद नहीं है। उनके निधन से पूरे प्रदेश में शोक की लहर चली । स्वर्गीय कर्ण सिंह जी बहुत ही अच्छे इन्सान थे, स्पष्टवादी थे, हंसमुख थे और राजनीति में उन्होंने एक पहचान बना रखी थी। वर्ष 1977 में वे पहली बार भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए और वर्ष 1990 में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर प्रथम बार प्रदेश विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए। उसके बाद 1998 में इस विधान सभा के दोबारा सदस्य चुने गए और श्री प्रेम कुमार धूमल जी की सरकार में राज्य मंत्री प्राथमिक शिक्षा एवम् विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी स्वतन्त्र प्रभार नियुक्त हुए। उन्होंने अपने जीवन काल में कई पुरस्कार भी प्राप्त किए। वर्ष 2009 में जब मैं कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष था तो मेरे पास आए और कहा कि मैं कांग्रेस पार्टी में शामिल होना चाहता हूं। वे कुछ वर्करों के साथ कांग्रेस ऑफिस में आए और विधिवत् तौर पर कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए। वर्ष 2012 के प्रदेश विधान सभा चुनावों में तीसरी बार बंजार विधान सभा क्षेत्र से प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। वे एक अच्छे राजनीतिज्ञ थे, ईमानदार तथा बहुत ही स्पष्टवादी थे और हमेशा हंसमुख रहते थे। 15 अप्रैल को मेरी ड्यूटी हिमाचल दिवस के अवसर पर कुल्लू में थी तो वे सारा दिन मेरे साथ रहे लेकिन निश्चित तौर पर उनको उस दिन बहुत ज्यादा बुखार था, बहुत खांसी हो रही थी। मैंने उसी वक्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी को बुलाया। मैंने कहा कि कल हॉस्पिटल खुलेगा तो आप इनके सिटीस्कैन वगैरह सारे टैस्ट कराएं और उपचार के लिए अच्छे हॉस्पिटल इनको भेजें।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

**स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री------- जारी**

दूसरे दिन ही सी०एम०ओ० साहब ने कर्ण सिंह जी का पूरा चैकअप किया और मुझे कहा कि इनको यह बीमारी है जिसके उपचार के लिए इन्हें एम्ज़ जाना पड़ेगा। श्री कर्ण सिंह उसी दिन AIIMS (दिल्ली) में गये और वहां दाखिल हुए। जब वे एम्ज़ में दाखिल थे तो मैंने दो बार उनके बेटे से और एक बार उनकी धर्मपत्नी से बात की, उन्होंने कहा कि है तो क्रिटिकल पर स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। लेकिन दुर्भाग्य से 12 मई, 2017 को जब यह खबर आई कि कर्ण सिंह जी का स्वर्गवास हो गया है तो हमें बहुत ही दुःख हुआ, सदमा हुआ कि एक अच्छे सहयोगी हमारे बीच में नहीं है। उनकी भरपाई नहीं हो सकती लेकिन हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को स्वर्ग में शांति मिले और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

इसी तरह श्री मूलराज पाधा जी वर्ष 1955 से कांग्रेस पार्टी के सदस्य रहे हैं। पंचायत के प्रधान भी रहे हैं और उसके बाद चामुण्डा मंदिर कमेटी के भी कई बार अध्यक्ष रहे हैं। उनको वर्ष 1985 में श्री वीरभद्र सिंह जी ने कांग्रेस पार्टी की तरफ से टिकट दिया था तथा वे इस विधान सभा में पहली बार आए। वे बहुत ही अच्छे व मृदु स्वभाव के व्यक्ति थे। साथ ही, एक सामाजिक कार्यकर्ता थे तथा हमें उनके साथ यहां इस मान्य सदन में रहने का मौका भी मिला। मैं उस वक्त भी मंत्री था और वे कई कामों को लेकर मेरे पास आते थे तथा कहते थे कि यहां पर डॉक्टर लगाओ, उन्होंने समाज सेवा बहुत की है। यह सारा सदन उनके निधन से बहुत ही दुःखी हुआ है। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को स्वर्ग में शांति मिले तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

मुख्य मंत्री जी ने शोकसंतप्त परिवार के लिए जो बातें कही हैं हम उनका समर्थन करते हैं।समाप्त

26.5.2017/1115/av-as/2

**अध्यक्ष :** अब ठाकुर गुलाब सिंह जी अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करेंगे।

**श्री गुलाब सिंह ठाकुर :** अध्यक्ष महोदय, ऐसा महसूस हो रहा है कि इस मान्य सदन का वह बहुत प्यारा चेहरा क्योंकि वे एक राजघराने से थे। मुझे तो लगता है कि the Crown Prince of this House, we have lost. वह एक बहुत ही कलरफुल पर्सनेलिटी थी और बड़ा हंसमुख चेहरा व आकर्षक व्यक्तित्व था। दिन-प्रतिदिन यानि जब भी वे इस मान्य सदन में आते थे तो एक नये अन्दाज में आते थे। नई ड्रैस में आते थे, उनकी ड्रैस आकर्षक होती थी तथा वे इस मान्य सदन में अलग से दिखते थे। रजिस्टर में हाज़िरी लगाने के बाद वे इस मान्य सदन में सबसे पहले अपोजिशन लॉंज के सभी माननीय सदस्यों से बड़ी मित्रता व हंसकर मिलते थे। मुझे तो ऐसा लगता है जैसे विपक्ष के नेता ने कहा कि across the party line, जब भी कोई व्यक्ति उनके पास काम लेकर गया, उन्होंने बड़े सरलभाव व तहदिल से उस काम को पूरा करने का प्रयास किया। मुझे इस बात की खुशी है कि हमने उनको जब भी कोई काम बताया तो उन्होंने उसको पूरा करने के लिए कभी कोई कमी नहीं छोड़ी, उनका व्यक्तित्व इस प्रकार का था। ऐसी कलरफुल पर्सनेलिटी हमें शायद ही इस मान्य सदन में अब कभी देखने को मिलेगी। एक दफ़ा तो वे ऐसी ड्रैस पहन कर आए कि सारी विधान सभा के सदस्य, ऑफिशियल गैलरी, गैलरी तथा प्रैस गैलरी में बैठे लोग देखते रहे गये क्योंकि वे यहां पर पोलो (खेल) घुड़सवार की ड्रैस डालकर आए थे।

**श्री वर्मा द्वारा जारी**

26/05/2017/1120/TCV/DC/1

श्री गुलाब सिंह ठाकुर- जारी

इस तरह से वे एक अट्रेक्शन का केन्द्र रहे हैं। ऐसे अच्छे विचारों के धनी व्यक्तित्व के आदमी आज हमारे बीच में नहीं रहे हैं। इससे उनके परिवार को

बड़ा सदमा पहुंचा है। पहले उनका बेटा चला गया और अभी वे उससे बाहर निकल ही थे कि वे बीमार पड़ गये और अंत में उनका निधन हो गया। वे आकर्षक व्यक्तित्व के धनी अवश्य थे, मगर वे अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रख पायें और अन्त में उनका निधन हो गया। उससे उनके परिवार को क्षति हुई है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें और उनके परिवार को इस सदमें को सहने करने की शक्ति दें।

हमारा मूल राज पाधा जी से ज्यादा परिचय नहीं था, हमारी परमेश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले और उनके परिवार को भी इस सदमें को सहन करने की शिक्त प्रदान करें। यही विचार मैं प्रकट करना चाहता हूं। धन्यवाद।

26/05/2017/1120/TCV/DC/2

**खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले मंत्रीः** माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसाकि माननीय मुख्य मंत्री जी, विपक्ष के नेता और हमारे अन्य साथियों ने स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी जो हमारे साथी और मित्र भी थे, के बारे में कहा कि उनका निधन एम्ज़ में 12 मई, 2017 को 59 वर्ष की आयु में हुआ और वे हम सबको छोड़कर स्वर्ग सिधार गए। माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसाकि सभी माननीय सदस्यों ने जिक्र किया कि वे हंसमुख और कठोर-से-कठोर बात भी हंसते हुए कहते थे ताकि किसी को भी उनकी बात कठोर न लगे। उनके देहान्त से कुछ ही दिन पहले मैं और धर्माणी जी दिल्ली (एम्ज़) में उनसे मिलने गये थे। मैंने दो बार उनसे मिलने का प्रयास किया लेकिन वे दोनों ही दिन "लाईफ स्पोर्ट" पर थे। मैं उनके डॉक्टरों से मिला और उन्होंने ने उनके स्वास्थ्य की

स्थिति के बारे में मुझे बताया। उनकी स्थिति ठीक नहीं थी। मैंने उनकी धर्मपत्नी, सुपुत्र और इन-लाज़ के जो लोग थे उनसे यही कहा कि जितनी मेहनत और लग्न के साथ इनकी सेवा कर सकें, अवश्य करें। उनको उम्मीद थी कि वे इस संकट की घड़ी से भी निकलकर आ जाएंगे। लेकिन उस व़क्त पूरे प्रदेश में सन्नाटा छा गया जब उनके देहान्त की ख़बर आई। इससे एक दिन पहले भी कुछ इस तरह की ख़बर आई थी तो मैंने डाक्टर गुलेरी जो कि उनका इलाज कर रहे थें उनसे बात की। उन्होंने ने बताया की श्री कर्ण सिंह जी के लंग्ज में प्रोब्लम होने की वज़ह से उनके स्वास्थ्य की स्थिति नाजुक हो गई थी, लेकिन अब वह इम्पूव कर रहे हैं। मुझे भी उनकी अन्तिम यात्रा में शामिल होने का मौका मिला। उनके बड़े भाई श्री महेश्वर सिंह जी व हजारों की संख्या में लोग वहां पर मौजूद थे। हम लोग जब इस दुनियां में होते हैं तो कई बार डिफरेंसिस भी हो जाते हैं, मगर जब आदमी

26/05/2017/1120/TCV/DC/3

इस दुनियां से चला जाता है, तो बचपन की यादें और उसका साथ न रहने के कारण आदमी टूट जाता है। मैंने उस दिन श्री महेश्वर सिंह जी को जितना टूटते हुए देखा, उसको मैं बयां नहीं कर सकता हूं। लेकिन श्री कर्ण सिंह जी जब तक इस दुनियां में रहे हंसते रहे और जब इस दुनियां से गए तब भी हंसते हुए गये। मगर मुझे दुख इस बात का है कि हमारे द्वारा उनको पूर्व में सचेत करने के बावजूद भी वे अपनी सहेत का ख्याल नहीं रख पाये। परन्तु शायद भगवान को यही मंजूर था और आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। मगर उनके परिवार के प्रति मेरी संवेदना और

श्रीमती एन0एस0 द्वारा.... जारी।

**26/05/2017/1125/ एन0एस0/डी0सी0/1**

**खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले मंत्रीः -----जारी**

जैसा कि हमारे बाकी साथियों ने कहा कि हमने एक बहुत अच्छा राजनेता खोया है और जिसकी कमी कई वर्षों तक पूरी नहीं होगी। भगवान उनके परिवार को इस सदमे को सहन करने की शक्ति दे और उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

**26/05/2017/1125/ एन0एस0/डी0सी0/2**

अध्यक्ष महोदय, ऐसे ही मूल राज पाधा जी थे, जिनका देहांत 80 वर्ष की आयु में धर्मशाला में हुआ है। मैं उनको बहुत अर्से से पारिवारिक व राजनेता के तौर पर जानता था। वे हमारे कांगड़ा ज़िला के पार्टी के अध्यक्ष भी रहे हैं। वे वर्ष 1985 में विधायक बने थे। वे बड़े स्पष्टवादी और आम जनता से जुड़े हुए व्यक्ति थे। मैं उनके स्वर्गवास से तीन दिन पहले ही उनसे मिलने उनके निवास स्थान पर गया था, तो वे बिस्तर से उठ करके बाहर बरामदे में आ गए। मैंने उनको कहा कि आपकी तबीयत ठीक नहीं है, आप अन्दर आराम कीजिए। तब वे कहने लगे कि अब आप आ गए हैं तो मेरी तबीयत ठीक हो गई है। मैंने उनको कहा कि आप टांडा मेडिकल कॉलेज या फोर्टिज़ अस्पताल में अपना चैकअप करवा लें। तब उन्होंने कहा कि मैं यहीं पर ठीक हो जाऊंगा। उस समय उनके बड़े व छोटे पुत्र साथ में थे और उनकी धर्मपत्नी पवना जी भी साथ थीं। मूल राज पाधा जी ने कहा कि मैंने काफी समय तक अपने लोगों की सेवा की है और मेरी इच्छा है कि मैं जब तक रहूं सबकी सेवा करता रहूं। मगर अगले तीन दिन में ही उनका स्वर्गवास हो गया था। उन्होंने अपने क्षेत्र विशेषकर घनियारा में जो छोटे लोग माइनिंग करते थे, उनकी परेशानियों को ले करके वे बड़े सक्रिय रहते थे। वे गरीब लोगों की भलाई के लिए कार्य करते थे। अपने अन्तिम क्षणों तक वे कई महत्वपूर्ण विषयों पर राय देते रहे हैं और आज वे हमारे बीच में नहीं हैं। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति मिले और उनके परिवार को इस सदमे को सहन करने की शक्ति मिले। उन्होंने समाज में ऐसी छवि छोड़ी है जिससे हम सभी को एक

आम नेता होने के साथ-साथ एक कार्यकर्त्ता होने की भी प्रेरणा मिलती है। मैं समझता हूं कि वे इसके लिए विशेष रूप से जाने जायेंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपका बहुत धन्यवाद।

**26/05/2017/1125/ एन0एस0/डी0सी0/3**

**श्री महेश्वर सिंहः** अध्यक्ष महोदय, यह प्रकृति का नियम है कि एक-न-एक दिन हम सबको इस संसार को छोड़ कर जाना है। इस माननीय सदन की परम्परा रही है कि साधारणतया हर बार सत्र के आरम्भ में हम शोक प्रस्ताव किसी-न-किसी पुण्य आत्मा को ले करके करते रहे हैं। परन्तु कुछ विभूतियां ऐसी होती हैं जो अपनी गहरी छाप छोड़ कर चली जाती हैं। उनमें से एक कर्ण सिंह जी थे। उनका जन्म रघुनाथपुर कस्बे में ज़िला कुल्लू में हमारे परिवार में हुआ था। उनका जन्म 14 अक्तूबर, 1957 में हुआ और उस परिवार में कर्ण सिंह मेरे से साढ़े आठ वर्ष छोटा था। हमारी एक बड़ी बहन थी, जिनकी शादी ज़िला मण्डी में हुई थी। वे पहले स्वर्ग सिधार गई थीं। छोटा होने के नाते कर्ण सिंह दादा-दादी, माता-पिता और सारे परिवार का लाडला था।

**श्री आर0के0एस0------द्वारा जारी**

26/05/2017/1130/RKS/HK/1

श्री महेश्वर सिंह...जारी

इन्होंने अपनी दसवीं तक की परीक्षा कुल्लू से प्राप्त की। उसके बाद मेरी बड़ी बहन इन्हें पुणे ले गई और इन्होंने वहां पर Ferguson College से अपनी डिग्री प्राप्त की। बाद में उनकी शादी हुई और उनके दो पुत्र भी हुए। सारा परिवार हंसी-खुशी के साथ रह रहा था। मुझे वर्ष 1990 में जब लोक सभा जाने का अवसर प्राप्त हुआ तो बंजार सीट से जनता पार्टी का टिकट स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी को मिला और वे विजयी भी रहे। दूसरे टर्म में, धूमल जी की सरकार में वे शिक्षा मंत्री रहे और वर्तमान सरकार में भी मंत्री थे। लेकिन वर्ष 2010 में एक ऐसी घटना घटी जिसने सारे परिवार को झंझोर डाला, वह घटना थी उनके बड़े बेटे

की मृत्यु! एक नौजवान पुत्र को इस तरह दुर्घटना में खो देना बहुत बड़ा आघात था। उसके बाद श्री कर्ण सिंह जी की प्रवृत्ति में बहुत परिवर्तन आए। वे भोले और कोमल हृदय के व्यक्ति थे। पुत्र की मृत्यु उनके शरीर में घुन की तरह चलती रही और न चाहते हुए भी उन्हें कुछ ऐसी आदतें पड़ गई जिससे वे अपने आप को सम्भाल न सके। इसके लिए मित्र लोग उन्हें बार-बार रोकते भी थे लेकिन वे पुत्र के गम में इतने गमगीन हो गए कि उससे बाहर निकलना मुश्किल था। लोगों की सेवा विशेष तौर पर गरीबों की सेवा के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। 15 अप्रैल के कार्यक्रम में जब माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी कुल्लू पधारे तो उस कार्यक्रम में हम सब वहां पर उपस्थित थे। माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी बीच में बैठे थे और उनके एक तरफ स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी बैठे थे और दूसरी तरफ मैं बैठा था। जब मैं परिधि गृह गया तो वहां पर मुझे किसी व्यकित ने कहा कि श्री कर्ण सिंह जी आज बड़ी मुश्किल से परिधि गृह की सीढ़ियां चढ़ रहे थे। मैंने उस बात का विश्वास नहीं किया। मैंने सोचा कि यह सीढ़िया इतनी ज्यादा तो है नहीं। वे अंदर गए और माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी से मिले। वे अपना दुःख छिपाने के लिए माननीय मंत्री जी से पहले ही मंच पर आ गए। उन्होंने सोचा कि मैं सम्भवतः इनके साथ नहीं चल पाउंगा। माननीय मंत्री जी ने इस बात को भांप लिया था कि उन्हें बुखार है। जब दूसरे दिन उनकी जांच हुई तो पाया गया कि लंग्स में पानी भर गया है और फ्लूड

26/05/2017/1130/RKS/HK/2

निकालना परम आवश्यक है। कुल्लू में फ्लूड नहीं निकाला गया क्योंकि उनके पास्ट हिस्ट्री में मलिगनैंसी थी इसलिए उन्हें एम्स ले जाना पड़ा। उन्हें 19 तारीख को एम्स ले गए। वे वहां पर 22 दिन तक लगातार अस्पताल में रहे। वे कोमल हृदय के व्यक्ति थे और उनके मन में सेवा करने की लग्न थी। उन्होंने बीमारी को छिपाकर गांव के सबसे ज्यादा टूअर अपने अंतिम दिनों में किए और कई लोगों के काम भी किए। कभी-कभी लोग कोमल हृदय के व्यक्ति का गलत फायदा भी उठा लेते हैं और ऐसी ही अप्रिय घटना घटी कि वे परिवार से दूर हो गए, हम से दूर हो गए। मैं उसके लिए उन्हें दोष नहीं देता हूं। कोई भी व्यक्ति जो

अपना नौजवान पुत्र खो दे और वह व्यक्ति कोमल हृदय का हो तो स्वभाविक है कि कुछ लोग उसको गुमराह करने में सफल हो जाते हैं

श्री बी0 एस0 द्वारा जारी...

**26/05/2017/1135/BS/HK/1**

**श्री महेश्वर सिंह जी द्वारा जारी**

आज ऐसा अवसर आया कि वह हम से तो दूर हुए ही बल्कि संसार से भी दूर हो गये है। जब स्वर्गीय श्री दौलत राम जी का निधन हुआ था तो आदरणीय अटल जी ने एक बात कही थी कि कभी-कभी व्यक्ति को अपनी लोकप्रियता सिद्ध करने के लिए संसार छोड़ना पड़ता है और लोकप्रियता का अंदाजा तभी होता है जब आदमी संसार छोड़ देता है। आदरणीय बाली जी ने ठीक कहा कि उनकी अंतिम यात्रा में न केवल कुल्लू से, प्रदेश से बल्कि प्रदेश के बाहर से भी उनके प्रसंशक, उनसे प्रेम करने वाले हजारों की संख्या में कुल्लू पहुंचे। सब ने नम आखों से उन्हें इस संसार से विदा किया। घर में उनकी 88 वर्ष की बुजुर्ग माता जी हैं, उन पर क्या गुजर रही हागी, यह तो भगवान ही जाने?

जहां तक स्वर्गीय मूल राज पाधा जी का सम्बन्ध है, उनसे मेरा परिचय तो नहीं था लेकिन एक बात सभी जानते हैं कि वे एक अच्छे समाज सेवक थे। गरीब, दीन- दुखियों की सेवा करते थे। आज वे भी हम सब को छोड़ कर चले गये हैं। जहां मैं परमपिता के चरणों में प्रार्थना करता हूं कि दोनों दिवगंत आत्माओं को प्रभु के चरणों में स्थान मिले, वहीं मैं अध्यक्ष महोदय का आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे समय दिया। मैं परमपिता से प्रार्थना करता हूं कि हम सबको ऐसी शक्ति प्रदान करे कि हम इस गहन दुख को सहन कर सके, विशेषकर मेरी मां के लिये। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

26/05/2017/1135/BS/HK/2

**सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मन्त्री** :माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हमें इस बात को सुन कर बहुत दुख हो रहा है कि श्री कर्ण सिंह जी हमारे मध्य नहीं रहे । स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी का जन्म 14 अक्तूबर, 1957 को रॉयल फैमिली में रूपी पेलेस में हुआ। वे सुल्तानपुर, कुल्लू के रूपी पेलेस में रहते थे। उन्हें कुल्लू के राजकुमार के रूप में भी जाना जाता था। श्री महेश्वर सिंह जी को उनकी मृत्यु का बहुत दुख है वे उनके छोटे भाई थे, हम जानते हैं कि उनकी स्थिति क्या होगी। उन्हें कितनी चोट लगी है, इसका अंदाजा हम लगा सकते हैं। हमने एक नौजवान राज नेता खोया है और हमें इसका बहुत दुख है। वे अपने पीछे अपनी पत्नी श्रीमती शिवानी सिंह व पुत्र आदित्य विक्रम सिंह को छोड़ गये हैं। जब मैं उनके परिवार से मिलने गई तो राजा साहब भी मेरे साथ थे। हमने देखा कि वहां पर किस तरह की स्थिति थी सब लोग गमगीन थे। वे काफी दिनों से बीमार चल रहे थे । हमें बड़ी हैरानी हो रही है कि उनको इतनी छोटी सी उम्र में यह सब कुछ हो गया । उन्होंने Ferguson महाविद्यालय पुणे से BA (ऑनर्ज) की उपाधि ग्रहण की थी और तीन बार बंजार विधान सभा चुनाव क्षेत्र से निर्वाचित होकर आए। वे 1998 में हिमाचल प्रदेश सरकार में प्राथमिक शिक्षा राज्य मंत्री बने। वे बड़े खुश दिल इन्सान थे और उनका व्यक्तित्व भी शानदार था। सभी को मान सम्मान देना उनका जैसे स्वभाव ही था। मैं जानती हूं कि यह उनका कठिन परिश्रम ही था जो उन्हें राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से सम्मनित किया गया। वर्ष 2009 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए और वर्ष 2012 में वे तीसरी बार बंजार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

श्री डी0टी0 द्वारा जारी

26/05/2017/1140/DT/YK/1

**सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मन्त्री** .....जारी

उन्हें 27 अगस्त, 2015 को हिमाचल प्रदेश मंत्रिमंडल में आयुर्वेद मंत्री के रूप में शामिल किया गया था। उन्हें विकास के काम करने का बहुत शौक था और वे सभी लोगों का ध्यान भी रखते थे। वे बहुत मिलनसार व्यक्ति थे। वे लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। मैंने उन्हें कई बार कहा कि आप एम्स से अपना उपचार करवायें और आप जल्द-से-जल्द ठीक हो जाएंगे। दुःख की बात यह है कि मृत्यु के सामने किसी का वश नहीं चलता है। उनका देहांत 12 मई, 2017 को रात 2.30 बजे एम्स में हुआ। हम जानते हैं कि उनके बड़े भाई श्री महेश्वर सिंह जी, जो यहां पर बैठे हुए हैं, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शिवानी सिंह जी तथा पुत्र श्री विक्रमादित्य सिंह जी को उनकी मृत्यु का गहरा दुःख हुआ है। हम सब इस दुःख की घड़ी में उनके साथ हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को इस सदमे को सहन करने की शक्ति भी प्रदान करे।

स्वर्गीय श्री मूलराज पाधा जी को मैं काफी लम्बे समय से नहीं मिल पाई हूं परन्तु फिर भी मैं थोड़ी सी बातें उनके बारे में कहना चाहती हूं। स्वर्गीय श्री मूलराज पाधा जी का जन्म 5 मई, 1937 को गांव घन्यारा, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में हुआ। वे अपने पीछे अपनी पत्नी श्रीमती पवना शर्मा, दो पुत्र पनीश व रजनीश को छोड़ गए हैं। उन्होंने मैट्रिक तक की शिक्षा ग्रहण की है। स्वर्गीय श्री मूलराज पाधा जी वर्ष 1955 से प्रदेश कांग्रेस पार्टी के सदस्य रहे तथा वर्ष 1975 से 1982 तक ग्राम पंचायत घन्यारा के प्रधान पद पर कार्यरत रहे। 8 मार्च, 1985 को वे पहली बार प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गए। समाज सेवा और बागवानी में उनकी विशेष रुचि थी। इनका देहांत 8 अप्रैल, 2017 को 80 वर्ष की आयु में गांव घन्यारा में हुआ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा समस्त परिवार को इस असहनीय दुःख सहने की क्षमता दें। दुःख में इन्सान को सहनशीलता रखनी पड़ती है। मुझे आज इन दोनों दिवंगत आत्माओं का बहुत दुःख हो रहा है। मैं बस यही कहना चाहती हूं।

26/05/2017/1140/DT/YK/2

**श्री सतपाल सिंह सत्ती**ः अध्यक्ष महोदय, माननीय सदन के नेता, श्री वीरभद्र सिंह जी ने स्वर्गीय श्री मूल राज पाधा, माननीय पूर्व सदस्य और स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी जो वर्तमान में हमारे बीच में मंत्री के रूप में काम कर रहे थे, के लिए शोकोद्गार रखा है, मै उसमें अपने आप को भी शामिल करता हूं। अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी के बारे में सबने यहां पर अपने विचार रखे हैं। जैसा कि विपक्ष के नेता प्रो0 प्रेम कुमार धूमल जी ने बताया कि स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी ने भारतीय जनता पार्टी में शुरू से काम किया है। उनका व्यक्तित्व कोमल और सौम्य स्वभाव का था। जब कोई भी व्यक्ति उनसे मिलता था तो वे हंसते हुए और एक सामान्य व्यक्ति की तरह बात करते थे।

श्री एस0 एल0 एस0 द्वारा जारी...

26.05.2017/1145/SLS-YK-1

**श्री सतपाल सिंह सत्ती ... जारी**

उन्होंने कभी भी अपने ऊपर या अपने व्यक्तित्व के ऊपर पद का प्रभाव नहीं आने दिया, ऐसा उनके बारे में कहा जा सकता है। वह जब मंत्री के रूप में भी मिलते थे, किसी भी बात को मन में न रखते हुए कि कौन व्यक्ति सत्तापक्ष का है या विपक्ष का है, वह सबकी बात सुनते थे और काम करने की कोशिश करते थे। उनका निधन अचानक हुआ है। इस अचानक निधन के कारण उनके परिवार को और वहां के समाज को बड़ा दुःख पहुंचा है। बन्जार विधान सभा क्षेत्र से वह तीन बार विधायक चुने गए। वहां के लोगों को जहां विशेष रूप से दुःख हुआ है, वहीं हम जैसे लोग, जो उनसे परिचित थे, जिन्होंने उनके साथ काम किया, उन्हें भी उनके निधन से गहरा दुःख पहुंचा है। उनके जाने से उनके परिवार को जो

दुःख हुआ है, वह असहनीय है। उनके बड़े भाई श्रीमान् महेश्वर सिंह जी हमारे साथ हैं। जैसे बताया गया कि पूर्व में उनके बेटे की भी दुर्घटना के कारण मृत्यु हुई है। उस घटना का भी बहुत ज्यादा प्रभाव उनके ऊपर था। उनका एक अच्छा स्वभाव होने के कारण इस माननीय सदन के लोग कर्ण सिंह जी को हमेशा गाईड करने की कोशिश करते थे, जैसा कि सबने इशारा किया है। लेकिन जिसको चोट लगती है, वही व्यक्ति जानता है। शायद बेटे की मृत्यु के दुःख से वह संभल नहीं पाए। इसी कारण से बार-बार बीमार रहने के कारण अंत में वह प्रभु के चरणों में चले गए।

जहां प्रशासन की दृष्टि से मैंने उनकी कार्य प्रणाली को देखा है वहीं सामाजिक सरोकारों को निभाने में भी वह बहुत आगे थे। वह जब कभी भी इस माननीय सदन के अंदर आते थे तो महेश्वर सिंह जी, जो उनके बड़े भाई हैं, इनके दोनों पांवों को हाथ लगाते हुए मैंने यहां उनको अनेकों बार देखा है। आज जहां मनोहर धीमान जी बैठे हैं वहां महेश्वर सिंह जी बैठते थे। पार्टियों में होने के कारण कई बार हम लोग थोड़ी आंख देखकर ही बातचीत या व्यवहार करते हैं। लेकिन मैंने देखा कि कर्ण सिंह जी, चाहे वह मंत्री थे या विधायक के रूप में थे अनेकों बार

26.05.2017/1145/SLS-YK-2

श्रद्धेय धूमल जी के पास आकर घूमकर इनके पांव में हाथ लगाकर जाते थे। फिर हमारे सीनियर लीडर्ज़ से बातचीत करते थे और बाद में हम जैसे लोगों से भी बातचीत करते हुए वह दोबारा अपनी सीट पर जाते थे।

प्रशासन की दृष्टि से कहूं तो जब वह आदरणीय धूमल जी के साथ प्राथमिक शिक्षा मंत्री थे तो एक दिन हम लोग भी उनके साथ मालरोड पर घूम रहे थे। उस समय हम युवा मोर्चा में थे। वहां उनको कोई व्यक्ति मिला जो शायद बंजार से ही आया हुआ था। हम भी उस समय उनके साथ चल रहे थे। उसने उनको काम बताया और कहा कि मैंने कल आपको इस काम के लिए मिलना है। कर्ण सिंह जी ने कहा, जैसे वह अक्सर कह देते थे कि

मैं यहीं हूं, आज ही बता दो कि काम क्या है? उस व्यक्ति ने कहा कि मेरा ट्रांसफर का काम है। उन्होंने कहा कि क्या तुम्हारे पास प्रार्थना-पत्र है। उसने कहा कि मैंने प्रार्थना-पत्र तो लिखा है लेकिन मैं वह कल दूंगा। जैसे कार्यकर्ता शर्माता है कि मैं मंत्री जी को मालरोड पर क्यों परेशान करूं, वैसा ही उसने किया। उन्होंने कहा कि आप अभी मेरे पास प्रार्थना-पत्र दो। फिर कार्यकर्ता को लगा कि यह प्रार्थना-पत्र न जाने कहां जाएगा। उन्होंने कहा कि आप अपनी पीठ मेरी ओर करो और उस प्रार्थना-पत्र पर 'may be done' लिखा। फिर कहा कि यह मैंने जेब में डाल लिया है। अगर तूने ही इसे छोड़ना है तो तू छोड़ दे अन्यथा मैं यह काम कल ही करवा दूंगा। इस तरह का उनका प्रशासनिक दृष्टिकोण मैंने उस समय मालरोड पर देखा। उन्होंने उस व्यक्ति को कहा कि आपने कल तक क्यों रुकना है, रात को रुकने से आपका ख़र्चा होगा इसलिए आप जाओ। यह भी कहा कि आप आए ही क्यों, मैंने अगले सप्ताह निर्वाचन क्षेत्र में स्वयं आना था। मंत्री के रूप में मैंने उनका इस तरह का काम देखा था।

वह हमारे बीच में से चले गए। भगवान् से प्रार्थना है कि उनको अपने चरणों में स्थान दे और परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

26.05.2017/1145/SLS-YK-3

स्वर्गीय आदरणीय मूल राज पाधा जी के बारे में जैसे बाली जी और दूसरे माननीय सदस्यों ने कहा, वह भी इस माननीय सदन के सदस्य रहे। उन्होंने भी अपने क्षेत्र में समाज सेवा की है और अपने लोगों की भी सेवा की है। एक पड़ाव पर आकर हर व्यक्ति को इस संसार से जाना ही है, इसलिए वह भी प्रभु के चरणों में गए हैं। मेरी भगवान् से प्रार्थना है कि उनको भी अपने चरणों में स्थान दे। उनकी पुन्यात्मा को शांति मिले और भगवान् उनके परिवार के सदस्यों को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

हम सब जो इस माननीय सदन के लोग हैं, मुझे लगता है कि सभी सदस्य कर्ण सिंह जी को अच्छी तरह से जानते थे और सब कुछ-न-कुछ कहना चाहते होंगे लेकिन समय की

सीमाओं के कारण शायद सब लोग न बोल पाएं। इसलिए मैं अपने दल की ओर से उन दोनों पुन्यात्माओं की शांति के लिए भगवान् से प्रार्थना करता हूं। *धन्यवाद।*

**अध्यक्ष :** अब माननीय सदस्य श्री कुलदीप कुमार जी अपने उद्‌गार प्रस्तुत करेंगे।

**श्री कुलदीप कुमार जी ---गर्ग जी के पास**

**26/05/2017/1150/RG/AG/1**

**श्री कुलदीप कुमार :** अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा जो शोक प्रस्ताव यहां रखा गया है, मैं उसमें शामिल होने के लिए खड़ा हुआ हूं। यहां कुछ माननीय सदस्यों ने अपने शोक प्रस्ताव इस माननीय सदन में रखे हैं। श्री कर्ण सिंह जी हमारे मौजूदा सदन के सदस्य थे और पिछले बजट सत्र में यहां सदन में बैठते थे। वे जब भी मिलते थे, हमेशा हंसकर मिलते थे। जैसा यहां बताया गया कि यह प्रकृति का नियम है कि जो इस दुनिया में आया है, उसे जाना भी है। लेकिन कुछ ऐसे लोग होते हैं जो अपनी छाप यहां छोड़कर जाते हैं उनमें से ही एक श्री कर्ण सिंह जी भी ऐसी शख्सियत थे जो प्रदेश में अपनी एक छाप छोड़कर गए हैं और आज पूरा प्रदेश उनके आकस्मिक निधन से शोक में डूबा हुआ है। श्री कर्ण सिंह जी पहली बार भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर वर्ष 1990 में सदन में जीतकर आए। वे तीन बार इस माननीय सदन के सदस्य रहे। मेरा उनके साथ वर्ष 1998 से वर्ष 2003 तक साथ रहा, हम और वे इस सदन में साथी रहे और वर्ष 2012 से जो यह वर्तमान सदन चल रहा है, उसमें भी हम इकट्ठे रहे हैं। उनमें एक बात थी कि वे एक बहुत ही ईमानदार और हसमुख इन्सान थे। वर्ष 1998 में जब हम विपक्ष में थे, तो उनके पास प्राथमिक शिक्षा का स्वतंत्र प्रभार था। जैसे कि माननीय श्री सतपाल सिंह सत्ती जी ने कहा कि वे जब भी कहीं रास्ते में मिलते थे और उनसे कोई काम होता था, तो वहीं पर खड़े-खड़े प्रार्थना-पत्र पर हस्ताक्षर करके अप्रूव कर देते थे और हमारे वे काम हो जाते थे। इसके अतिरिक्त बहुत सारे कार्य उन्होंने ऐसे किए जिससे उन्होंने अपनी एक छाप यहां छोड़ी है।

अध्यक्ष महोदय, श्री कर्ण सिंह जी वर्ष 2012 में जब तीसरी बार इस माननीय सदन के सदस्य बने, तो उनको आयुर्वेदा एवं सहकारिता विभाग दिया गया। उन्होंने आयुर्वेदा में बहुत अच्छा काम किया। एक नई बात जो उन्होंने की कि जब वे आयुर्वेदा मंत्री बने, तो पूरे हिमाचल में हर चुनाव क्षेत्र में बोर्ड लगाए गए और जो संबंधित विधायक थे, उनकी फोटो भी लगाई गई और आज भी कई जगह वे बोड्र्ज लगे हुए हैं। आज उनकी यहीं यादें हमारे पास हैं। जहां भी जिस विधायक का चुनाव क्षेत्र था वहां उन्होंने ये बोड्र्ज लगाकर दिए।

**26/05/2017/1150/RG/AG/2**

अध्यक्ष महोदय, इसके अलावा जब भी सहकारिता विभाग की कोई बैठक होती थी या अधिकारियों अथवा कर्मचारियों की कोई बैठक होती थी, तो वे मुझे वहां बुलाकर मेरा सहयोग लेते थे क्योंकि मैं भी दस वर्ष तक सहकारिता मंत्री रहा हूं। उन्होंने मुझे उस मीटिंग में बुलाकर कोई-न-कोई सहयोग लेना होता था। यह उनका एक स्वभाव था। वे एक बहुत ही ईमानदार और खुशमिजाज़ व्यक्ति थे। हमने उनके माथे पर कभी कोई शिकन नहीं देखी। हम लोग कई बार सुबह की सैर में इकट्ठे होते थे और काफी बातें होती थीं और उनसे हम मजाक भी किया करते थे। लेकिन उन्होंने हिमाचल प्रदेश में अपने स्वभाव और व्यक्तित्व की एक छाप छोड़ी है जिसको हम लोग आज याद कर रहे हैं और आज उनकी क्षति की भरपाई नहीं हो सकती।

अध्यक्ष महोदय, मैं, श्रीमती आशा कुमारी जी एवं श्री अजय महाजन जी तथा अन्य लोग उनके घर गए थे। हम वहां उनके परिवार के साथ इस दुःख की घड़ी में शामिल हुए। तो वहां भी हमें कई बातें उनके बारे में लोगों ने बताईं।

अध्यक्ष महोदय, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को ईश्वर के चरणों में शान्ति मिले और उनके परिवार को उनके जाने से जो क्षति हुई है, ईश्वर उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार श्री मूल राज पाधा जी का भी निधन हुआ है।

**एम.एस. द्वारा जारी**

26/05/2017/1155/MS/AG/1

**श्री कुलदीप कुमार जारी**----

श्री मूलराज पाधा जी वर्ष 1937 में पैदा हुए थे। उनका 80 वर्ष की आयु में हाल ही में निधन हुआ। वे वर्ष 1985 में धर्मशाला विधान सभा क्षेत्र से विधायक चुने गए थे। मेरी उनसे अधिकतर मुलाकात पार्टी मीटिंग में ही होती थी। वे मेरे अच्छे मित्र थे। उनकी एक ही बात मशहूर थी कि वे गरीबों तथा समाज सेवा के प्रति समर्पित थे। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि वे दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा उनके परिवारजनों को इस असहनीय क्षति को सहन करने की शक्ति दे। धन्यवाद।

26/05/2017/1155/MS/AG/2

**श्री गोविन्द सिंह ठाकुरः** अध्यक्ष महोदय, 14 अक्तूबर, 1957 को कुल्लू जिला के रघुनाथपुर में रूपी पैलेस में जन्म लेने वाले श्री कर्ण सिंह जी के बारे में यह कहा जाता है कि वे मिलनसार तथा हंसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे। स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी को यह कभी भी नहीं लगा कि वे एक राज परिवार में पैदा हुए हैं। मुझे याद आता है जब हम महाविद्यालय में पढ़ते थे तो कर्ण सिंह जी मंत्री या विधायक होने के बावजूद चलते-चलते सब लोगों से मिलते थे और यहां तक कि गाड़ी खड़ी करके बातचीत करना इत्यादि ऐसे अनेक गुण उनमें थे। वे पार्टी पॉलिटिक्स से हटकर सब लोगों के प्रिय थे। श्री कर्ण सिंह जी 59 वर्ष की छोटी आयु में ही 12 मई, 2017 को हम सबके बीच में से चले गए हैं।

अध्यक्ष जी, स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी के बारे में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि वे भाग्यशाली थे क्योंकि उन्होंने जीवन बड़ी शान से जीया और अन्त में वैसे ही शान से गए भी हैं यानी प्रदेश के आयुर्वेद एवं सहकारिता मंत्री रहते हुए वे इस दुनिया से गए।

श्री कर्ण सिंह जी का पहली बार राजनीति में वर्ष 1989 में तब पदार्पण हुआ जब श्री महेश्वर सिंह जी लोकसभा के लिए सांसद चुने गए। वर्ष 1990 में पहली बार बंजार विधान

सभा क्षेत्र से उन्हें भारतीय जनता पार्टी का टिकट मिला और वे चुनाव जीते। फिर वर्ष 1998 में दूसरी बार चुनाव जीत करके आए और प्रो0 धूमल जी की सरकार में शिक्षा, विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग का कार्यभार उन्होंने सम्भाला। वर्ष 2012 में वे फिर से चुनाव जीते।

अध्यक्ष जी, स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी की गत वर्ष की एक बात मुझे याद आ रही है। मैं उस समय दिल्ली के हिमाचल भवन में था। मुझे उनसे एक छोटा सा काम था। मैंने कर्ण सिंह जी को फोन किया तो उन्होंने मुझे उलटे पूछा कि आप कहां हैं? मैंने कहा कि मैं दिल्ली के हिमाचल भवन में 503 नम्बर कमरे में हूं। इतना सुनकर उन्होंने फोन काट दिया। मैंने सोचा कि गलती से फोन कट गया परन्तु ठीक दो मिनट बाद मेरे कमरे के दरवाजे पर नॉक हुई। जब मैंने दरवाजा खोला तो कर्ण सिंह जी सामने खड़े थे। उन्होंने कहा कि मैं भी यहां अपने चैकअप के लिए आया था तो बाइचांस जब आपने कहा कि आप हिमाचल भवन मे हैं तो मैं

**26/05/2017/1155/MS/AG/3**

आपसे मिलने आ गया। अध्यक्ष जी, वे मंत्री थे और सत्ता पक्ष के थे लेकिन यह उनका बड़प्पन था। उन्होंने आते ही पहले अपना मोबाइल निकाला और मुझसे पूछा कि ठाकुर साहब काम क्या है? मैंने कहा कि काम ये है। वह काम बिजली बोर्ड से श्री एस0एस0 नेगी जी से संबंधित था। उन्होंने तुरन्त उनको फोन किया और कहा कि ऐसा-ऐसा काम है और यह मेरा छोटा भाई है इसलिए इस काम को तुरन्त कर दीजिए और मुझे आधे घण्टे में रिपोर्ट कर दो। मेरा वह काम हो गया था और उस आधे घण्टे में हमने बैठकर चाय भी पी और गपशप भी की।

**जारी श्री जे0के0 द्वारा**-----

**26.05.2017/1200/जेके/एएस/1**

**श्री गोविन्द सिंह ठाकुरः-----जारी--------**

मैंने उनको यह भी कहा कि आज आप बहुत बढ़िया लग रहे हैं। उन्होंने कहा कि हां, मैंने सोचा है कि मैं अब वह काम नहीं करूंगा। मैंने कहा कि भाई साहब, बहुत अच्छा है क्योंकि यदि आप वह काम नहीं करेंगे तो हमारे कुल्लू जिला में आपके बराबर कोई पर्सनैलिटी नहीं है। अभी जो पिछला विधान सभा का सत्र हुआ, एक दिन मुझसे बोले कि यार देख आज मैं पूरा तोता बन कर आया हूं, कैसा लग रहा हूं? मैंने कहा कि आप जो भी पहनते हैं, आप पर सभी कुछ अच्छा लगता है। उनको वर्ष 2010 में एक बड़ा झटका लगा, उनके बड़े बेटे का देहान्त हो गया। उसके बाद एक मृदु हृदय के मालिक होने के साथ-साथ वह उनकी कमजोरी भी बन गया। वे अपने आप को सम्भाल नहीं पाए। मैं इस माननीय सदन में उनकी पत्नी डॉ0 शिवानी सिंह जी, बेटे आदित्य विक्रम सिंह जी और जैसे कि अभी महेश्वर सिंह जी ने कहा कि 88 वर्षीय मां है और जिस दिन हम उनकी शव यात्रा में शामिल होने के लिए गए तो मैंने महेश्वर सिंह जी से पूछा कि माता जी कहां है ? इन्होंने कहा कि माता जी से आप क्या बात करोगे? मैंने कहा कि मैं माता जी से मिलना चाहता हूं और जब मैं अन्दर गया, माता जी से मिला तो मैंने कहा कि माता जी कर्ण सिंह जी चले गए, बहुत बुरा हुआ। अब उस मां के दिल में देखें क्या था, मां ने कहा कि देखो मुझ लंगड़े-लूले को तो वह ले नहीं जाता, मेरे बच्चों को ले गया। पहले मेरे पोते को ले गया, अब कर्ण को ले गया। अच्छा तू बता, ये बातें भूल जा तो मैंने पूछा माता जी क्या? महेश्वर सिंह जी की पत्नी वगैरह वहां बैठे थे, वे

**26.05.2017/1200/जेके/एएस/2**

सभी रोने लगे। मां ने कहा कि तेरे लिए मैंने प्रसाद रखा है, पहले तुझे प्रसाद देती हूं। मैंने कहा माता जी, प्रसाद मैं ले चुका हूं। कहने लगे कि तू आता नहीं, जब तू पीछे आया था तो तुझे मैंने पैरों में पहनने वाली पूलें दी थी अब मैंने तुझे कुछ और रखा है। यानि इतना गमगीन वातावरण था उस मां के हृदय पर क्या बीत रही होगी। भगवान उनके पूरे परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

अध्यक्ष महोदय, श्री मूलराज पाधा जी हिमाचल प्रदेश की पहली पीढ़ी के राजनीतिज्ञों में से एक थे। उनके परिवार को भी इस दुख को सहन करने की ईश्वर शक्ति प्रदान करें । श्री कर्ण सिंह जी आयुर्वेद एवं सहकारिता मंत्री और श्री मूलराज पाधा, पूर्व सदस्य के शोकोद्गार जो माननीय मुख्य मंत्री और विपक्ष के नेता ने रखे, उनमें मैं भी अपने आप को सम्मिलित करता हूं।

**26.05.2017/1200/जेके/एएस/3**

**श्री राकेश कालियाः** अध्यक्ष महोदय, जो शोकोद्गार आज मुख्य मंत्री महोदय यहां लाए हैं, माननीय कर्ण सिंह जी, जिनकी मृत्यु कुछ समय पहले हुई है, उसमें मैं अपने आप को भी शामिल करता हूं। जैसे कि सभी माननीय सदस्यों ने कहा, मैं सारी बातें दोहराना नहीं चाहूंगा लेकिन अपनी एक छोटी सी बात शेयर करना चाहूंगा। वे जब मंत्री नहीं थे तो मेरे साथ इस बैंच पर बैठा करते थे। हमेशा मैं उनकी ड्रैस की प्रशंसा किया करता था कि आप बहुत हैंडसम लग रहे हैं तो कहते थे कि मुझे अच्छा पहनने का बहुत शौंक है और उसके लिए मैं हमेशा ट्राई करता हूं और डिज़ाइनर कपड़े पहनता हूं। वे बहुत ही अच्छे तरीके से बात करते थे। कभी-कभी उनके परिवार के बारे में भी जब मैं बात करता था तो उनकी बातों से उनके बेटे को खोने का गम साफ झलकता था। वे बहुत

अच्छे इन्सान थे। अपना सारा होमवर्क अपने मोबाइल में देखकर , यहां बैठकर फाइल ले कर बहुत मेहनत से अपना सारा काम निपटाते थे और जब वे बीमार चल रहे थे, तब भी मैंने उनसे कई बार पूछा कि कैसे हो तो कहते थे कि ऐसा लगता है कि मैं अब ठीक नहीं हो सकूंगा। दो-तीन बार मेरी उनसे इस सम्बन्ध में बात हुई। उनके जाने का हम सभी को दुख है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार के सदस्यों को यह क्षति सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

अध्यक्ष महोदय, दूसरा शोकोद्गार मूलराज पाधा जी का है। मैं उनको व्यक्तिगत तौर पर नहीं जानता लेकिन बाली साहब अक्सर उनकी बातें हमसे शेयर करते रहे हैं। वे बहुत अच्छे इन्सान थे और एक बार वे इस विधान सभा के सदस्य भी रहे। मैं उनके शोक में भी अपने आप को सम्मिलित करता हूं। आपने मुझे समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

**26.05.2017/1200/जेके/एएस/4**

**अध्यक्षः** स्वर्गीय श्री कर्ण सिंह जी, आयुर्वेद एवं सहकारिता मंत्री व श्री मूल राज पाधा, पूर्व विधायक , हिमाचल प्रदेश विधान सभा के निधन पर जो उल्लेख सदन में प्रस्तुत किए गये हैं, उसमें मैं भी अपने आप को शामिल करता हूं।

श्री एस0एस0 द्वारा जारी---

26.05.2017/1205/SS-AS/1

**अध्यक्ष... क्रमागतः**

तथा शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं और इस मान्य सदन की भावनाओं को शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचा दिया जायेगा। अब मैं सभी माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे दिवंगत आत्माओं को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए अपने-अपने स्थान पर कुछ क्षण के लिए मौन खड़े हो जाएं।

***(सदन में उपस्थित सभी माननीय सदस्य दिवंगत आत्माओं को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए अपने-अपने स्थान पर कुछ क्षण के लिए मौन खड़े हुए।)***

जैसा कि इस मान्य सदन की पूर्व परम्परा रही है कि यदि किसी सीटिंग मेम्बर का निधन हो जाए तो सभा की कार्यवाही शोकोद्गार के उपरांत उनके सम्मान में उस दिन के लिए स्थगित कर दी जाती है, अतः यदि सदन की सहमति हो तो दिवंगत आत्माओं के सम्मान में आज की बैठक स्थगित कर दी जाए। सहमति दी गई।

**अब इस मान्य सदन की बैठक शनिवार, 27 मई, 2017 के 11:00 बजे पूर्वाह्न तक स्थगित की जाती है।**

**शिमला-171 004** **सुन्दर सिंह वर्मा,**
**दिनांकः 26 मई, 2017** **सचिव**